व्याख्यान - 1

Date:

स्नातक तृतीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक विकास

मैथिली कथा साहित्यक विकास प्रायः बीसम शताब्दीक प्रथम दशक सँ मानल जा सकैत अछि। ओहिसँ पहिने विद्यापतिक "पुरुष परीक्षा" क अनुवाद 1889 ई० मे चन्दा झा द्वारा कएल गेल छल। मुदा मौलिक लेखनक अन्तर्गत सर्वप्रथम 1907-08 मे जीवनाथ मिश्रक 'मोहिनी मोहन' कथा भेटैत अछि। मैथिलीक आरम्भिक कथा सभ पर आन भारतीय भाषाक सदृश संस्कृत साहित्यक पूर्ण प्रभाव पड़ल छल। एहि प्रसंग प्रो० आनन्द मिश्र कहैत छथि —

"मैथिली कथा लेखनक प्रारम्भिक अवस्थामे कथा सभ लिखल गेल, ओकरा सभ पर संस्कृत आख्यान-उपाख्यान शैलीक पूर्ण प्रभाव रहलैक ते भाषाक क्षेत्रमे ओ स्वयं घटनामे आवद्ध रहल, एकर चरित्र चित्रण सँ बेसी महत्व घटनाक कथन वा विवरण केँ देल गेलैक। कथाक इतिवृत्त केँ विशेष महत्ता देल गेलैक, सेहो तत्सम प्रधान शैली केँ विशेष प्रश्रय देल गेलैक। पंचतंत्रक शैली सँ मैथिलीक कथाक विकास देखबामे अबैत अछि ओहि शैलीमे विद्यापतिक 'पुरुष परीक्षा' लिखल गेल तथा ओ शैली मैथिलीक प्रारम्भिक कथा शैली केँ पूर्ण रूपेण प्रभावित कएलक।"

आरम्भिक मैथिली कथा साहित्यक रचना काल अपेक्षाकृत अधिक मौलिक रीतिएँ

उपाख्यान ओ उपकथा-प्रणाली मे, जाहि मध्य कथांत अवश्य संस्कृत साहित्यसँ लेल गेल अछि मुदा कथा नियोजन ओ कहबाक रीति कथाकारक मौलिक वस्तु थिक।

आरम्भिक कथाक प्रसंग विभिन्न विद्वानक मन्तव्यक अध्ययनक उपरान्त कहल जा सकैत अछि जे निश्चित रूपें मैथिली कथाक प्रारम्भिक रूप पर ~~साहित्य~~ संस्कृत साहित्यक पूर्ण प्रभाव पड़ल अछि। मुदा ई प्रभाव पड़ल मात्र कथ्यात्म रूपें, अर्थात कथाक आधार संस्कृत साहित्य अवश्य छल, मुदा लेखन शैली पूर्णतः मौलिक ओ तत्कालीन सामाजिक परिस्थितिक अनुकूल रहैत छल। बदलैत सामाजिक ओ राजनीतिक परिवेश मे कथाक स्वरूप परिवर्तित होइत रहल अछि। कथाक विकास क्रमके स्पष्ट करबाक लेल मैथिलीक आलोचक इतिहासकार लोकनि अपना अपना दृष्टिकोण सँ कथा साहित्य के विभिन्न युग मे विभाजित कयलनि अछि। एकर विश्लेषण अगिला व्याख्यान मे होएत।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA